रात्रि क्लास 5/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

जब बेहद का बाप मिल जाता है तो समझना चाहिए बेहद की बादशाही उनसे मिलने की है। बाप जब बेहद की बादशाही देते हैं। अभी दे नहीं सकते हैं वास्तव में। तुम श्रीमत से पा सकते हो। देने की चीज़ नहीं। पढ़ाई में बाप डायरैक्शन देते हैं एक तो पावन बनना है। ऐसे नहीं कैसे बाबा याद करें? बच्चे यह पूछ नहीं सकते। बच्चे तो बाप को ऑटोमैटिकली याद करते हैं। स्वतः जानते हैं बाप पावन है। बाप को जान लिया। अच्छा, पतित से पावन कैसे बनाते हैं यह भी समझ की बात है ना। फिर बाप डायरैक्शन देते हैं, तुम पावन सतोप्रधान थे। फिर तमोप्रधान बने हो। फिर सतोप्रधान बनना है। यह सिर्फ बाप नहीं, टीचर भी है। बाप रास्ता बताते हैं ऐसे पावन बन सकते हो। मुश्किलात पावन बनने की है। मेहनत भी इसमें है। पावन बनने ही बाप को याद करना पड़ता है। तो फिर पतित नहीं बनना चाहिए। कहते हैं पावन बने; परन्तु माया बनने न देती। गिरा देती है। बच्चियाँ कुछ सपूत होती हैं, बच्चे कपूत होते हैं। कुमारी लज्जायमान होती है। कुमार निर्लज्ज होते हैं। बनावट ही ऐसी है। पुकारती भी स्त्री है। ऐसे कब नहीं सुना होगा, पुरुष पुकारे कि स्त्री हमको नंगन करती है। नहीं। तो मूल बात पवित्रता की होती है। सवाल ही बाप यह पूछते हैं कब नंगन तो नहीं हुई हो? बच्चे बताते हैं हुए हैं वा नहीं। बाप समझाते हैं युगल बनते हैं तो नंगन होते ही हैं। शादी नंगन होने लिए की करते हैं। रावण राज्य में नंगन होने की ड्रामा में नूँध है। फिर बाप कहते हैं नंगन नहीं होना है। मेरे राज्य में कब नंगन नहीं होते। और कोई भी ऐसे कह न सके। मेरे राज्य में..... राज्य तो कोई का है नहीं। वेश्य और शूद्र सम्प्रदाय का धर्म है नंगन होना। विकारी होने से पाप ज़रूर होता है। बच्चे समझ से रेसपाण्ड कर सकते हैं। बाबा हम पावन बनेंगे। बाबा सतयुग में हम नंगन नहीं होते थे। भारतवासी स्वर्ग को 40 हज़ार वर्ष दूर ले गए हैं। बाप स्वर्ग को बहुत नज़दीक ले आते हैं। बाप कहते हैं नई दुनिया थी, तो फिर ज़रूर होगी। आठ वर्ष में नई दुनिया होनी है। तो कितना बड़ा फर्क पड़ जाता है। बाप ही बताते हैं कल्प की आयु 5000 वर्ष सत्य है। तुम समझाते हो तो मनुष्य कहते, शास्त्रों में तो इतने वर्ष हैं। बोलो, भगवान हमको यह समझाते हैं। मनुष्य शास्त्र बताते हैं। यहाँ भगवान समझाते हैं। कितना फ़र्क है! बाप कहते हैं शास्त्र भक्तिमार्ग में हैं। भक्ति को कितना समय हुआ? बच्चे समझते हैं मनुष्य बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं। तुम आठ वर्ष कहते हो, तो मनुष्य समझते यह गपोड़ा है। कोई से भी पूछो तो कहेंगे कल्प की आयु 40 हज़ार वर्ष है। अभी तो छोटा है। बाप कहते हैं बहुत-2 पुराना है। तुम बच्चे भी पुराने, तो तुम्हारा पार्ट भी पुराना है। इतनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। वण्डर है ना। ऐसे-2 महीन गुह्य बातें बच्चों को भूल जाती हैं। कहते भी हैं आत्मा सितारे मिसल है। भृकुटि के बीच रहती है। बहुत छोटी है; परन्तु भक्ति के लिए बड़ा रूप बनाया है। आत्मा कब घिसती-बढ़ती नहीं है। देवताओं की पूजा होती है तो बाप की भी पूजा होनी चाहिए। मैं तुमको पावन बनाता हूँ। तुम पहले-2 मेरी भक्ति करते हो। तुम्हारे बुद्धि में है नम्बरवन भक्त हम बनते हैं। पास्ट बच्चों को याद आता है। अपना घर भी आत्मा को याद आता है। बाप और आत्माएँ निर्वाणधाम में रहती हैं। वहाँ से तुम पार्ट बजाने आते हो स्वर्गधाम में। समझाया जाता है स्वर्ग से नर्क, नर्क से स्वर्ग कैसे होता है। बीच में संगम पर बाप आते हैं। जो कुछ नहीं जानते उनको तुच्छ बुद्धि कहा जाता है। बाप कहते हैं तुम ही बहुत जन्मों के अंत में तुम मुझे मिलते हो। पहचानते हो। बाप है सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर। ऊँच ते ऊँच। तो यह 84 के चक्र का नॉलेज है। तुम जानते हो बरोबर सतयुग में इनका राज्य था। हम अभी वही बन रहे हैं। दिल में जँचता भी है; परन्तु माया फिर भी भुला देती है। बाप कहते हैं जैसे मैं सर्वशक्तिवान हूँ वैसे रावण भी है। शिव की जीत भी भारत में, रावण की जीत भी भारत में होती है। जो अपनी पूजा कराते हैं उनको हिरण्यकश्यिप कहा जाता है। नरसिंग को अमरी लगाते हैं ना। फिर वह अमरी(आम) पुजारी के काम में आता है। उतरान पर कितनी ...ली आदि आते हैं। फिर सभी बेच देते हैं। सिंध में यह सब बहुत है; क्योंकि बाप भी सिंध में आते हैं। मगध देश में आते हैं। गुप्त टीचर, तो पढ़ने वाले भी गुप्त हैं। आत्मा भी गुप्त है ना। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।